B.A. III, Paper III
M.A JOHN

सामाजिक मानवशास्त्र के उद्देश्य

किसी भी विज्ञान का उद्देश्य प्राकृतिक अथवा समाज के किसी विशेष भाग का वैज्ञानिक विधियों के द्वारा अध्ययन करना अर्थात उस भाग से सम्बन्धित आंकड़ों का एकत्रीकरण करना उसके आधार पर सिद्धान्तों का निर्माण एवं मानव के कल्याण में उस ज्ञान का उपयोग करना है। Piddington ने मानवशास्त्र के दो प्रमुख उद्देश्य बताए हैं। मानव प्रकृति के सम्बन्ध में यथार्थ ज्ञान प्राप्त करना तथा सांस्कृतिक व्यक्तियों सम्पर्क के परिणामों का अध्ययन करना।

समाज में मानव के स्वभाव अथवा व्यवहार के सम्बन्ध में समाज में अनेक प्रकार के विचार पाये जाते हैं। कभी यह कहा जाता है कि मानव सहयोगी, परोपकारी एवं आक्रमक होने के शान्तिप्रिय होता है। दूसरी ओर यह भी विचार पाया जाता है कि मानव स्वार्थवादी और आक्रमक होता है। अपने अपने पक्ष को सिद्ध करने के लिये मानवशास्त्रियों द्वारा आदिम समाजों के कुछ अस्पष्ट और अप्रमाणित उदाहरण प्रस्तुत कर दिये जाते हैं। सामाजिक मानवशास्त्र का उद्देश्य आधुनिक अध्ययनों के द्वारा मानव प्रकृति का सही निरूपण करना है। तथा वैज्ञानिक प्रमाण प्रस्तुत करना है।

मानव प्रकृति को समझने के लिये यह भी जानना जरूरी है कि आदिम समाज की प्रकृति कैसी है, उनकी समस्याओं, रहन सहन आदि उनकी

विभिन्न व्यवहारों की जानकारी भी जरूरी है। उनके द्वारा जीवन की विभिन्न समस्याओं को सुलझाने के प्रयास में प्राप्त सफलता और असफलता सभ्य समाज के लोगों को भी अपनी समस्याओं को सुलझाने एवं सामाजिक पुनर्निर्माण के कार्य में सहायक प्रयास करती है।

Riddington के अनुसार इसका दूसरा महत्वपूर्ण उद्देश्य आधुनिक समाज के सम्पर्क के फलस्वरूप आदिम समाजों पर पड़ने वाले प्रभावों का पता लगाना है। सभ्य समाज से सम्पर्क के कारण आदिम समाज में काफी परिवर्तन उत्पन्न हुये हैं; सामाजिक मानवशास्त्र का उद्देश्य सांस्कृतिक सम्पर्क से उत्पन्न होने वाली समस्याओं का ठीक ठीक पता लगाना, सही ज्ञान का संग्रह करना एवं उनके वास्तविक कारणों की खोज करना है।

Riddington के अतिरिक्त और दूसरे विद्वानों ने भी इसके उद्देश्यों पर प्रकाश डालने की चेष्टा की है।

Durkheim, Spencer तथा Maggan ने सामाजिक मानवशास्त्र के उद्देश्यों की चर्चा करते हुये यह बताया कि इसका मुख्य उद्देश्य सामाजिक संस्थाओं का वर्गीकरण एवं प्रकार्यात्मक विश्लेषण करना है। Tylor ने विचार किया कि सामाजिक मानवशास्त्र का उद्देश्य संस्कृतियों का वर्गीकरण एवं विश्लेषण है। British मानवशास्त्री तथा American मानवशास्त्रियों ने भी इन्हीं विचारों का समर्थन

किया है। Evans Pritchard के अनुसार सामाजिक मानवशास्त्र में संस्कृति और समाज दोनों से सम्बन्धित समस्याओं का अध्ययन का समान महत्व है। फिर भी संरचना सम्बन्धी अध्ययन पहले किये जाने चाहिये। आधुनिक युग में सामाजिक मानवशास्त्र में सामाजिक संरचनाओं, सामाजिक व्यवस्थाओं एवं सामाजिक संस्थाओं के अध्ययन पर विशेष बल दिया जाता है।

England के मानवशास्त्रियों की एक समिति के अनुसार आदिम संस्कृति का उसके वास्तविकरूप में अध्ययन किया जाना चाहिये। बाहरी संस्कृति के प्रभावों का भी अध्ययन किया जाना चाहिये। तथा आदिम समाजों के अध्ययन के आधार पर इतिहास के पुनर्निर्माण की भी बात कही है।

इस प्रकार यह स्पष्ट है कि सामाजिक मानवशास्त्र आदिम समाजों का अध्ययन कर आधुनिक सभ्य समाजों को समझने का प्रयास करता है तथा अध्ययनों द्वारा मानव प्रकृति के सम्बन्ध में वास्तविकताओं का पता लगाता है, सांस्कृतिक सम्पर्क के परिणामों से परिचित कराता है और इसे हल करने में योगदान देता है।

—x—

Scanned with CamScanner